International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 472-475

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 472-475
www.allresearchjournal.com
Received: 11-08-2020
Accepted: 13-09-2020

देवेन्द्र प्रसाद
पी0एचडी0 शोधार्थी
के.आर.(पी.जी.) कॉलेज, मथुरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
देवेन्द्र प्रसाद
पी0एचडी0 शोधार्थी
के.आर.(पी.जी.) कॉलेज, मथुरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

मथुरा जनपद (उ0प्र0) में उद्योगों का विकास एवं मानव जन जीवन पर उसका प्रभाव

देवेन्द्र प्रसाद

सारांश
मानव जीवन के विकास में उद्योगों का विशेष महत्व है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। जहाँ की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या राष्ट्रीय आय से कृषि का विशेष योगदान है। फिर भी वर्तमान युग औद्योगिक युग है। औद्योगिक विकास के बिना किसी भी देश का विकास सम्भव नहीं है। विश्व के अधिकांश देश कृषि पर आधारित हैं। कृषि विभिन्न प्रकार के महत्वपूर्ण उद्योगों को स्थापित करने में सहायक है। कृषि से सम्बन्धित उद्योगों से राष्ट्रीय आय की प्राप्ति होती है तथा लाखों लोगों को रोजगार मिलता है। भारत के विभिन्न राज्यों में कृषि पर आधारित उद्योगों की बहुलता है। कृषि पर आधारित उद्योग किसी देश प्रदेश की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ और संतुलित बनाने तथा मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों का उद्योग में यथोचित उपयोग करने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है।

प्रस्तावनाः
मथुरा तहसील में 10 विकास खण्ड तथा 89 न्याय पंचायत एसं 479 ग्राम समाये हैं। 887 ग्रामों की संख्या है। जनपद मथुरा वह पावन स्थली है जहां कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। मथुरा जनपद उ0प्र0 की पश्चिमी सीमा पर यमुना नदी के तटीय भाग में स्थित है। इसके पूर्व में जनपद महामाया नगर, उत्तर में अलीगढ़ जनपद, द0पू0 में जनपद आगरा, द0प0 में राजस्थान प0उ0 में हरियाणा जनपद का अशासीय विस्तार 27014′ तथा 27057′ एवं देशान्तरीय विस्तार 77017′ से 78012′ के मध्य स्थित है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 38.11 वर्ग किमी0 है। कुल जनसंख्या 1931186 है।

अध्ययन का उद्देश्य –
प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र जनपद मथुरा में उद्योगों का विकास एवं मानव जीवन पर उसका प्रभाव का आंकलन करना है। ताकि उसके आधार पर अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों के घटने से मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी कर उन समस्याओं को रोका जा सके।

विधि तंत्र –
प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु आंकड़ों का संकलन विभिन्न श्रोतों से करने का प्रयास किया गया है। आंकड़ों का संकलन प्राथमिक द्वितीयक व साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है। द्वितीय आंकड़े ब्लॉक स्तर पर किये गये हैं। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधि से किया गया है।

जनपद मथुरा अवस्थिति मानचित्र

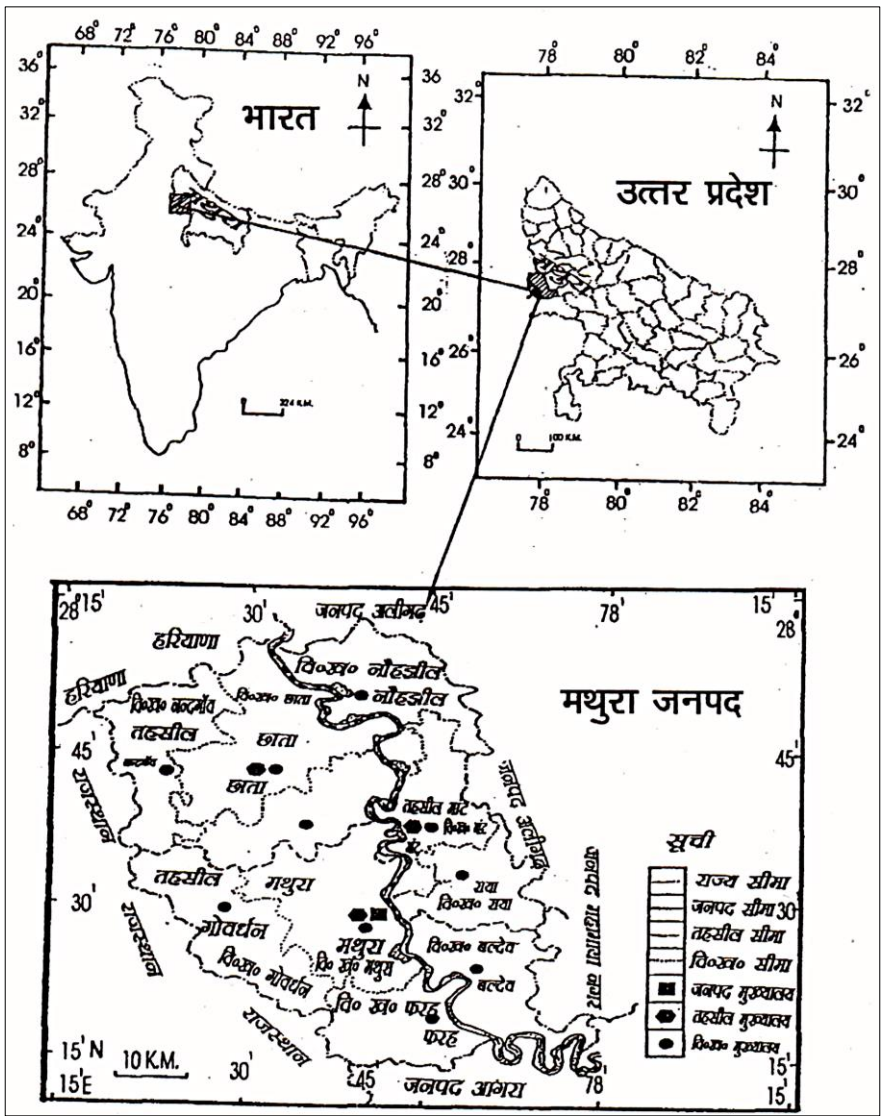

सभी उद्योगों में कुल अचल सम्पत्ति पर 10 प्रतिशत राजकीय सहायता एवं अनुसूचित जाति, भूतपूर्ति सैनिक व महिलाओं उद्यमियों को अतिरिक्त 5 प्रतिशत वित्तीय सहायता।

मथुरा, राया एवं फरह विकास खण्डों में रूपये 5 लाख तक मशीन एवं प्लाट खरीदने पर 10 प्रतिशत की अतिरिक्त सहायता। विकास खण्डों में प्रधान उद्योगों के रूप में प्रथम इकाईयों को 20 लाख तक अचल पूँजी पर 10 प्रतिशत की राजकीय सहायता।

9 वर्ष तक बिक्री कर में कुल अचल सम्पत्ति के 150 प्रशित तक की छूट तथा पंजीकरण नीति के अन्तर्गत राजकीय एवं संस्थागत विपणन सहायता।

जिला उद्योंग केन्द्र द्वारा अल्पसंख्यकों, शिक्षित बेरोजगारी, महिला उद्यमियों एवं ग्रामीण कारीगरों के लिये विशेष औद्योगिक कार्यक्रम।

मथुरा से कोसीकलां मथुरा से भरतपुर मार्ग एवं मथुरा से आगरा रोड पर जी0टी0 रोड के निकट औद्योगिक की स्थापना।

वर्तमान उद्योग केन्द्र एवं उद्योग धन्धें –

जनपद मथुरा में सामूहिक रूप से निम्नलिखित उद्योग केन्द्र प्रमुखतः चिन्हित किये गये हैं जिनसे सम्बन्धित उद्योग धन्धें एवं उनकी इकाईयों को भी उन के साथ ही अंकित किया गया है। वर्तमान में पराग डेयरी के अतिरिक्त कोई बड़ा दुग्ध उत्पाद उद्योग जनपद में नहीं है। आधुनिक उद्योगों की दृष्टि से यह जनपद 19 वीं शताब्दी के अंत तक पिछड़ा रहा केवल हथकरघा, कागज तथा पत्थर नक्काशी से सम्बन्धित कुछ इकाईयां मथुरा जनपद में कार्यरत थी। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक समय के लगभग 25 वर्षो तक यह जनपद औद्योगिक क्षेत्र में पिछड़ा रहा, इस अवधि के केवल सूती कपड़ा तथा प्रिन्टिंग प्रेस की कुछ इकाईयॉ स्थापित हुई हैं।

वर्ष 1960 के बाद अध्ययन क्षेत्र मथुरा जनपद में कुछ बृहद् औद्योगिक इकाईयों की स्थापना हुई जिनमें रमन आयरन फाउण्ड्री तथा स्टील सेलिंग मिल्स, काशी टैक्स एवं कुक्स इण्डस्ट्रीज भारत इलेक्ट्रोनिक इण्डस्ट्रीज मथुरा जनपद के वृन्दावन नगर में स्थापित हुई, मिड लैण्ड फ्रूट एण्ड बेजीटेबल प्रिजर्वेशन फैक्ट्री मथुरा तथा बृजवासी फाइन आर्ट्स एण्ड ऑफसेट वर्क्स, मथुरा आदि प्रमुख थी। अध्ययन क्षेत्र में वर्तमान समय में 11 बृहद् औद्योगिक संस्थान कार्यरत हैं। ये निम्नवत हैं–

1. इण्डियन ऑयल कारपोरेशन लि0, मथुरा (पेट्रोलियम पदार्थ)
2. ए0टी0वी0 प्रोजेक्ट्स इण्डिया लि0, मथुरा (सुगर मिल मशीनरी)
3. जयश्री रोलर फ्लोर मिल्स, मथुरा (आटा, मैदा, सूजी आदि)
4. शालीमार तार प्रोड्क्ट्स लि0, कोसीकलॉ (तारकोल)
5. छाता शुगर लि0, कोसीकलॉ (चीनी) शीरा।
6. सौ पाइप्स लि0, कोसीकलॉ (सबमजेर्ड आर्क बेल्डेड पाइप्स)
7. जय प्रेस्ट्रेस्टेड प्रोडक्ट्स लि0, कोसीकलॉ (रेलवे स्लीपर)
8. गिन्नी फिलामेन्ट, कोसीकलॉ (कोटन यार्न)
9. श्याम केन पोलिफेब प्रा0लि0, मथुरा (बालवेट क्लाक)

10. क्लासिक एस0प्रा0लि0, कोसीकलॉ (सिन्थेटिक एस) एवं
11. सुख संचारक कम्पनी, मथुरा आयुर्वेदिक औषधि निर्माण की दृष्टि से जनपद का प्रमुख औद्योगिक संस्थान है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद मथुरा में इन बृहद् औद्योगिक संस्थानों के अतिरिक्त जनपद में फूड प्रोड्क्ट्स की 551 इकाईयाँ, बेवरेज की 2 इकाइयाँ, काटन टैक्सटाइल की 72 इकाईयाँ, जूट हम्प तथा मास्टा टैक्सटाइल की 9 इकाईयाँ, हौजरी तथा गारमेण्ट्स की 225 इकाईयाँ, फूड प्रोड्क्ट्स की 292 इकाईयाँ, पेपर उत्पाद, प्रिन्टिंग प्रेस की 210 इकाईयाँ, चमड़ा उद्योग की 176 इकाईयाँ, रबड़ तथा प्लास्टिक उद्योग की 87 इकाईयाँ, रसायन उद्योग की 188 इकाईयाँ, अलौह धातु खनिज उत्पाद की 189 इकाईयाँ एवं लौह धातु खनिज उत्पादन की 709 इकाईयाँ कार्यरत हैं। अध्ययन क्षेत्र में मशीनरी पार्ट्स की 105 इकाईयाँ, इलेक्ट्रोनिक मशीनरी पार्ट्स की 50 इकाईयाँ परिवहन निर्माण की 4 इकाईयाँ तथा 2015 अन्य इकाईयाँ कार्यरत हैं।

अध्ययन क्षेत्र में साड़ी प्रिन्टिंग एवं सिले वस्त्र निर्माण में मथुरा तथा वृन्दावन प्रमुख है। मथुरा व वृन्दावन में ही ब्रेजियर एवं चमड़े के जूते का काम होता है। प्रिंटिंग प्रेस एवं प्लास्टिक उद्योग के अधिकांश इकाईयाँ मथुरा में हैं। आयुर्वेदिक दवाइयों की दृष्टि से मथुरा तथा बल्देव विकास खण्ड प्रमुख हैं। गिलट तथा चाँदी के आभूषण मुख्य रूप से राया, मथुरा तथा वृन्दावन में तैयार किये जाते हैं। मूर्ति निर्माण प्रमुखतः से वृन्दावन, सौंख तथा मथुरा में तैयार होते हैं। निबाड़ उद्योग तथा ब्रास टेप्स की दृष्टि से मथुरा महत्वपूर्ण है। कृषि यंत्र अध्ययनक्षेत्र में लगभग सभी प्रमुख नगरों में निर्मित होते हैं। अध्ययन क्षेत्र में उद्योग धंधों की स्थिति को मानचित्र 1 के द्वारा स्पष्ट दर्शाया गया है।

सम्भावित उद्योग –

अध्ययन क्षेत्र में इन उद्योगों के अतिरिक्त, दाल उद्योग, राइस मिल, कोल्ड स्टोरेज, रिफाइंड वनस्पति घी, ऑयल मिल, बान रस्सी उद्योग, आलू चिप्स उद्योग, पाउडर बेकरी टार्च आदि उद्योग लहसुन पाउडर, तेल पर्ल आयुर्वेदिक दवाऐं फल संरक्षण (टमाटर, सोस, अचार, चटनी, जैम, चैरी आदि बनाना) बिस्कुल बेकरी उद्योग, नमकीन व कन्फैक्शनरी उद्योग कैटिल फीड, कार्न, राइस फ्लेक, गोल्ड पैकिंग, पान मसाला, च्यूमिंग तम्बाकू, बुडेन फर्नीचर उद्योग, बैलगाड़ी, बुग्गी उद्योग, डोर फिटिंग, आरा मशीन, लकड़ी के विद्युत बोर्ड, गिल्ली बनाना, पीने की तम्बाकू, रेशम उद्योग, साल्वेन्ट एक्सट्रेक्सल प्लांट एवं राइस प्लांट, आइस कैण्डी, गुड, खान्डसारी उद्योग ईंट उद्योग, सीमेंट जाली, गमलें, पानी की टंकी आदि बनाना सेनेटरी आइटम्स, चटाई बनाना, कुम्हार गिरी, चीनी उद्योग, डिस्टीलरी इण्ड.।

जनपद मथुरा उद्योग धन्धे

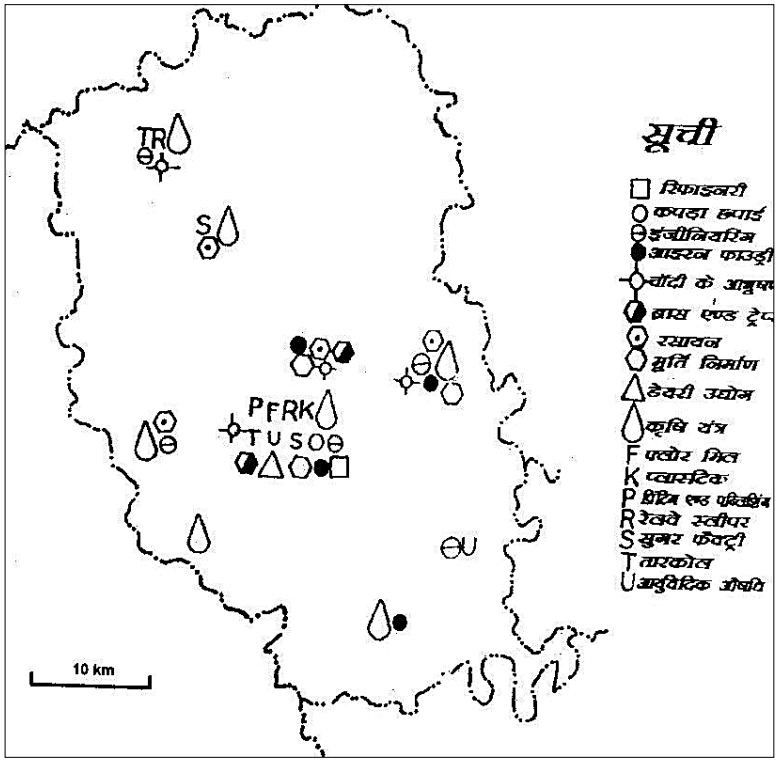

पशुधन पर आधारित उद्योग –

चमड़ा उद्योग, बोन मिट्टी, लैदर बैग्स, पर्स, शू मेकिंग आदि।

प्लास्टिक, रबड़ उद्योग पर आधारित उद्योग –

प्लास्टिक के खिलौने, प्लास्टिक शीशी, काक डिब्बे, प्लास्टिक बटन, कंघे, प्लास्टिक पेन, प्लास्टिक बॉल पेन निर्माण, प्लास्टिक फुटवियर, प्लास्टिक शूट, बरसाती प्लास्टिक पाइप, साफ्ट, प्लास्टिक कन्टेनर्स, प्लास्टिक गेम प्लेट, साइन बोर्ड, प्लास्टिक डोरी, कैने, रबर की ट्यूब, टायर उत्पादन टॉयर रिटेरिंग, साइकिल, मोटर साईकिल, स्कूटर, कार, जीप के सीट कबर व हुड हवाई चप्पल, प्लास्टिक के श्रृंगारदान, पी0पी0सी0 फिल्म बैग, पी0सी0 सुतली आदि।

रासायनिक उद्योग –

पेन्ट, वाशिंग, ड्राई डिस्टेम्पर, वाशिंग पाउडर, सोप, नेलपोलिश, कासमैट, अगरबत्ती, धूपबत्ती, दूध पाउडर, टूथपेस्ट, फिनाइल, नैफ्यलीक, गोली, बूट पालिस, फाउन्टेन पेन, पेन इंक, परफ्यूम हेयर ऑयल, रिफिल एवं डोट पैन बनाना, चॉक टेर चाक सर्जीकल कोटन बैण्डेज, आयुर्वेदिक उद्योग, माचिस, थर्माकोल, स्ट्राबोर्ड, हैण्डमेड पेपर फाइल, कबर, ग्रीटिंग कार्ड्स, कोरोगेटेड

बॉक्स, जिंक सल्फेट, कोरोगेटेड पेपर शीट आलू, मक्का से स्टन्च, ग्रीस लुब्रीकेण्ट का उत्पादन, पेपर बोर्ड मिल, भूसा एवं राइस हस्तपर आधारित उद्योग ग्लास एवं मूंगा मोती उद्योग फाउण्ड्री उद्योग आदि।

जनरल इंजीनियरिंग उद्योग –

कृषि यंत्रों का निर्माण, एल्यूमीनियम बर्तन उद्योग, फाइण्ड्री उद्योग साईकिल पार्ट्स जैसे रिम, साईकिल कैरियर, स्टेण्ड व स्पींकनीली, रोलिंग शटर, दाल मिल, राइस मिल, मशीनों का फेवरीकेशन, लेंकिन के दरबाजे, खिड़की जंगला निर्माण, स्टील फर्नीचर, अलमारी, कैश बॉक्स, ऑलपिन, जैम्स क्लिप, वार नेल्स, लोहे की सीट की छगन से जूते के चोबे, टेग्स का निर्माण, हॉस्पीटल बैड्स, ट्रे आदि, फीलिडंग बैड्स, पालना, फोल्डिंग फर्नीचर, ट्रांसफार्मर बनाना, मरम्मत मशीनरी पाट्स जनरल इंजीनियरिंग ऑटो गैराज, बिहिकल्स मरम्मत, प्लेट, तेल, स्टोव निर्माण, सेलिंग (सरिया मिलें)

विद्युत उद्योग –

विद्युत बल्व (जी0एल0एस0 लैम्प) स्टेप्लाइजर, टी0वी0 एन्टीना, इमरजैन्सी लाईट, विद्युत चोक बाइन्डिंग, विद्युत राड की फन्टी, विद्युत मीटर वाइडिंग, विद्युत हीटर एलीमेंट, विद्युत हीटर, विद्युत सीलिंग फेन, एक्जोस्ट फेन, मिनाएचर बल्व, वैटरा असेम्बलिंग, ड्राईसेल आदि समक्ष रूप से प्रभावित कर सकें।

निष्कर्ष–

शोधार्थी ने यह पाया है कि जनपद मथुरा में उद्योगों का विकास कम हो पाया है। यह कहा जा सकता है कि कृषि ऐसी दुधारू गाय है जिसका उपयोग औद्योगिक प्रगति के प्रोत्साहन की अपरिहार्यता से सम्बन्ध है। इस प्रकार औद्योगिक विस्तार के बिना कृषि उत्पादन वृद्धि स्वयं में एक गलत धारणा है। मथुरा जनपद जैसी पिछड़ी कृषि आधारित ग्रामीण सामाजिक आर्थिक व्यवस्था एवं जन जीवन में परिवर्तन औद्योगिकीकरण के द्वारा ही किया जा सकता है। मथुरा जनपद को राज्य एवं भारत सरकार द्वारा औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए जनपदों की श्रेणी में रखा गया है। जब उद्योग ही पिछड़े होंगे तो वहाँ के मानव जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। इसलिये मथुरा जनपद के अन्तर्गत उद्योगों के पिछड़ेपन की दृष्टि में रखकर सरकार एवं जिला प्रशासन द्वारा उद्योगक केन्द्र, मथुरा के देखरेख में उद्योगों के विकास के लिये योजना तैयार की जाये, जिससे जनपद मथुरा में उद्योगों का विकास किया जा सके जिससे लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठ सके।

संदर्भ (References)

1. Singh RL. (ed.): India: A Regional Geography, N.G.S.I. Varansi 1972.
2. Kulman MS. Geography of India and Burma, P.573, Madras, 460.
3. U.P. District Gazetteer Mathura 1980, 367p.
4. Idid 3.
5. White Back RH. The Geography Factors, Century Co. New York 1932, 87p.
6. सामाजिक आर्थिक समीक्षा जनपद मथुरा, 2002–03, पृ0 4–6,
7. Ich H. Introduction at the Atmosphere, Network 1965, 22p.
8. डॉ0 जे0एन0 पाण्डेय एवं डॉ0 कमलेश : कृषि भूगोल, पृ0 43 बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर
9. Singh Jasbir a SS. Dhilon, Agricultural Geography, Tata M.C.Grow Hill Pub., Co. New Delhi 1984.
10. शर्मा बी0एल0, मृदा विज्ञान, पृ0 28, गोरखपुर 1995.
11. Subrahmenyam VM. The Climate of Indian Relation of the Distribution of Natural Vegitation by Indian Geography 1958;3:1-12.
12. Ray Choudhary *et al*. soils of India Indian Council of Agricultural Research New Delhi 1963.
13. डॉ. कौशिक एस.डी. : मानव भूगोल, पृ0 28, रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवाजी रोड, मेरठ
14. Singh, Rana PR. Pattern Analysis of rural Settlement Distribution and Their Types in saran Plain: A quantitative Approach, in R.L., Singh, K.N. Singh Reaing in Rural Settlement Geography, S.G.S., I. Res Pub. No., Varansi 1975, 282p.
15. Paipal JK. *et al*. Human Saptial Behaviour in Social Gragraphy, North set Yet Duxbury Press 1976, 3.
16. Dietrach S. Der Floridee's Human Resources, the Geographical Review 1998;38(2):278.
17. सरलामुखीः सामाजिक बेहतरी के लिये जनसंख्या शिक्षण योजना, वर्ष–26 अंक 23–24, 26 जनवरी 1983, पृ0 21
18. ..... Local Level Planning and Rural Development Alternative Strategies.
19. Whittlesys D. Major Agriculture Regional at the Earth, Annals Ass, of American Geography 1936, 26.
20. आर0सी0 तिवारी एवं बी0एन0 सिंह : कृषि भूगोल, पृ0 76, इलाहाबाद 1988
21. Jeratt HR. Geography of Manufacturing Mcdamalt & Eveens Polymauth 1977.
22. Todoaro MP. Internal Migration in Development Countries I.L.Q. Geneva 1976.
23. Belshaw H. Population Growth and Levels of Consumption. London 1956.
24. Prasad KN. Indians Rural Problems, New Delhi 1991, 31.
25. Idid P-30.
26. औद्योगिक निर्देशिका जिला उद्योग केन्द्र, मथुरा, 1996.
27. Singh RB. Geography of Rural Development the Indian Micro Level Experience, New Delhi 1986, 135p.
28. Connr AMO. New Railway Construction in East Africa, Traaction,s I.B.G. No 1995;36:21p.